श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सा विद्या या विमुक्तये — श्री शत्रुंजय-मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

सम्यग्ज्ञान प्रवेशिका

दिसम्बर - २०१९

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर

६

शहर ______________________

विद्यार्थी का नाम ______________________

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	वाणव्यंतर
(२)	कुसंस्कार
(३)	योनि
(४)	सात
(५)	पृथ्वीतल
(६)	सद्गुरु
(७)	संवर
(८)	मर्यादा
(९)	कलुषित
(१०)	पर्याप्त
(११)	मरुदेवा
(१२)	ज्योतिष्क
(१३)	सामायिक
(१४)	कुगुरु
(१५)	अजरामर
(१६)	शुद्ध
(१७)	विरती
(१८)	हत्या
(१९)	नमोत्थुणं
(२०)	तप

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	सुधर्मा
(२)	निश्चय
(३)	लोकान्तिक
(४)	उज्जयिनी
(५)	पवित्रता
(६)	हाथी
(७)	सोम
(८)	दया
(९)	इन्द्र
(१०)	उत्तरा फाल्गुनी
(११)	लज्जा
(१२)	श्रावक
(१३)	भवन
(१४)	अदत्तादान
(१५)	सारसिक्षा दासी
(५)	पापवाला
(६)	साधक
(७)	जानना
(८)	उनके बाद
(९)	धर्म के
(१०)	एकत्व
(११)	सामायिक
(१२)	सूक्ष्म
(१३)	यथाख्यात
(१४)	ब्रम्हचर्य
(१५)	आस्रव
(१६)	प्रयत्न पूर्वक
(१७)	यति
(१८)	प्रथम
(१९)	काया द्वारा
(२०)	दूसरा

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	असत्य बोलना
(२)	ज्योतिष
(३)	अनुपालन
(४)	और

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	६	(६)	६
(२)	४	(७)	३
(३)	८	(८)	२
(४)	१०	(९)	१
(५)	९	(१०)	५

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	१६
(२)	१४
(३)	१५
(४)	१०
(५)	६
(६)	५
(७)	१६५
(८)	४५
(९)	१८
(१०)	८८०

प्रश्न-६ ✓ या × / प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	×	(१)	११
(२)	✓	(२)	६
(३)	×	(३)	२
(४)	×	(४)	१८
(५)	✓	(५)	३
(६)	×	(६)	२३
(७)	✓	(७)	१६
(८)	×	(८)	५
(९)	✓	(९)	२१
(१०)	×	(१०)	१३

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ______________________ जांचनेवाले की सही ______________________

प्रश्न - ८

१. महावीर प्रभुके जन्म समय पर सृष्टीकी झलक - तीर्थंकर परमात्माका जन्म एक अलौकीक होता है. चंद्र सुर्यादि सब ग्रह उच्च स्थान मे विद्यमान होते है. सर्वत्र सौम्यभाव शांति और प्रकाश विकसीत होता है. अंधकार नष्ट हो जाता है. उल्कापात, रजोवृष्टी धरतीकंप और दिग्दाह जैसे उपद्रवोका अभाव हो जाता है. दिशाओमे विशुध्दि और निर्मलता छा जाती है, सब पक्षी मीठी मधुरी वाणीसे शब्द करते है. मंद मंद और सुगंधी पवन इधरसे उधर बहेता है. सुकाळ, आरोग्य से पृथ्वी भरी हुइ होती है और ऐसे समय मे त्रीशलारानीने पुत्र को जन्म दिया. महावीर प्रभु का जन्म हुवा.

२. करेमि भंते सुत्र का अर्थ - हे भगवंत! मै समताके लाभरूप सामायिक करता हूँ. पापवाले व्यापार का त्याग करता हूँ. मै जहाँ तक नियम का सेवन करता हूँ वहाँ तक दो प्रकारके करण (करना, करवाना) और तीन प्रकारके योग द्वारा मन वचन काया के द्वारा करूँगा नही, कराऊंगा नही, इस तरह हे भगवंत! उस संबंधी (पूर्वमे किये हुए) पापसे मै वापस फिरता हूँ. मै मनसे उसका पश्चाताप करता हूँ. गुरूसाक्षीसे प्रगटरूप निंदा करता हूँ। मेरी आत्मा को पाप से वोसिराता हूँ।

३. लज्जालु - श्रावकका ये नववा गुण - धर्मका अधिकारी होता है. सदा सदाचारका आचरण करता है, धर्म करनेके लिए ये योग्य होता है, समाज का डर बहुत सारे अकार्योसे अटकाता है. सन्मार्ग पर ले जाता है. मर्यादा और लज्जा श्रावकके जीवनमे बहुत ही उत्तम गुण है. और होना चाहिये. ये सब सद्गुणोकी माता है. इससे जीवन नंदनवन बनता है, आर्यक्षेत्र मे जन्म लेनेवाले पुण्यवान आत्मा इस गुणको अपनाकर अपना जीवन सार्थक करती है. ये गुणवाला आदमी सदा निंदित कार्यसे दूर रहेता है, व्रतका पालन बराबर करता है. समाजमे अपना नाम रोशन करता है.

४. तिर्यंग जृंभक देव - तीर्थंकरादि पुण्यवानोके यहाँ धनधान्यादि वस्तुए देने वाले ये देव दस प्रकारके होते है - ① अन्न जृंभगा ② पान जृंभगा ③ वस्त्र जृंभगा ④ घर जृंभगा ⑤ पुष्प जृंभगा ⑥ फल जृंभगा ⑦ पुष्पफल जृंभगा ⑧ शयन जृंभगा ⑨ विद्या और अवियत्त जृंभगा ये देव जीस भवनमे रहेते है. वो भवन भी जृंभगा उसी देवलोकके नामसे पहचाना जाता है. तीर्थंकर परमात्मा जब माता की गर्भमे आते है. तब ये सब भंडार भर देते है.

५. एकत्व और अन्यत्व भावना - जीव अकेला दुनियामे आता है, अकेला कर्म बांधता है. कर्मका फल अकेले ही भोगता है. और अकेला ही दुनियासे विदा होता है, मेरा मेरा करके जीवन जीता है, साथमे कुछ नही जाता ये भावना इसका चिंतन एकत्व भावना. मै आत्मा हूँ, आत्मा देहसे अलग है, घर परिवार, फर्नीचर, बाह्य सब सामग्री आत्मासे पर है. कोइ किसीका नही सब अन्य है. इसका चिंतन अन्यत्व भावना है।